कृति – **सर्वमंगल दायक श्री आदिनाथ पूजन विधान**

रचयिता – **प.पू.क्षमामूर्ति साहित्य रत्नाकर आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज**

संस्करण – तृतीय, मई, 2009

प्रतियाँ – 1000

संपादन – मुनि 108 श्री विशाल सागर,
ब्र. सुखनन्दन जी भैया

संकलन – ब्र. ज्योति दीदी, आस्था दीदी, सपना दीदी

संयोजन – किरण, आरती दीदी

सम्पर्क सूत्र – 9660996425,9829127533, 9829076085

प्राप्ति स्थल – 1. जैन सरोवर समिति, निर्मल कुमार गोधा, 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर. मो.:9414812008 फोन : 0141–2319907 (नि.)

2. श्री 108 आचार्य विशद सागर माध्यमिक विद्यालय, बरौदियाकलां,जिला–सागर, फोन:07581–274244

3. श्री राजेश कुमार जैन ठेकेदार, ए–107, बुध विहार, अलवर, फोन : 9414016566

4. श्री सरस्वती प्रिन्टर्स, जयपुर. मो. 9983461656

सौजन्य – श्री रतनलाल जी शिखर चन्द जी, मनोज जी कासलीवाल (साईंवाड़ वाले)

अवसर – क्रिस कासलीवाल प्रपौत्र श्री रतनलाल जी कासलीवाल के जन्म दिन के अवसर एवं आदिनाथ जयन्ती पर चैत्रबदी नवमी, सम्वत् 2065, 20 मार्च, 2009 60, गोविन्द नगर (पूर्व), दशहरा रोड़, आमेर रोड़, जयपुर **मो. 9414055776**

मुद्रक – बसंत जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
एस.बी.बी.जे. के नीचे, चांदी की टकसाल, जयपुर
फोन : (का.) 2615920 (नि.) 2630236, 9772220442
म्.उंपसरू तूंजपचंचमत/लीववण्बवण्पद

पुनः प्रकाशन सहयोग – 15

सर्वमंगल दायक

श्री आदिनाथ पूजन विधान

श्री आदिनाथ विधान का मण्डल

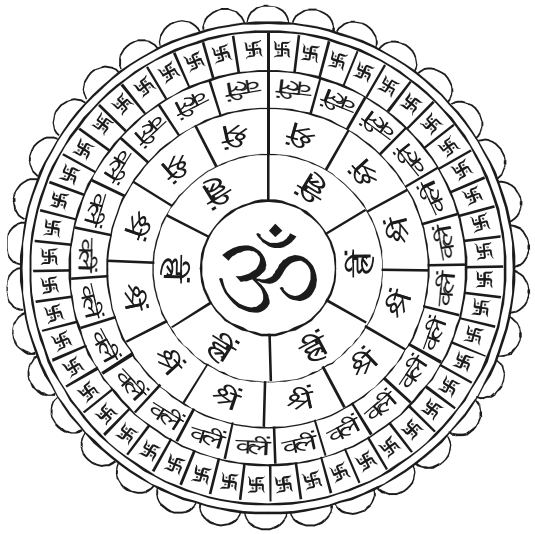

मध्य में - ॐ
प्रथम वलय में - 6
द्वितीय वलय में - 12
तृतीय वलय में - 24
चतुर्थ वलय में – 48

रचयिता :

परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज

अपनी भावना

विघ्नौघा प्रलयं यांति शाकिनी भूत पन्नगा।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनश्वरे।।

भगवान जिनेन्द्र देव की पूजा स्तूति करने से संसार की समस्त विघ्न, बाधायें मिट जाती हैं। यहाँ तक कि शाकिनी, डाकिनी, भूत–प्रेत आदि ऊपरी बाधायें भी शांत हो जाती हैं और विष भी अमृत बन जाता है।

जिनेन्द्र प्रभु की भक्ति से जिनधर्म की प्रभावना का परचम सदैव ऊँचा रहा है। सीता की भक्ति से अग्नि का नीर, सोमा की भक्ति से नाग का हार जैसे कई दृष्टांत है। आचार्यश्री मानतुंग स्वामी ने 'भक्तामर स्तोत्र' की रचना कर श्री समंतभद्र स्वामी ने 'स्वयंभू स्तोत्र' की रचना कर, आचार्यश्री वादिराज स्वामी ने 'एकीभाव स्तोत्र', कुमुदचन्द्राचार्य जी ने 'कल्याण मंदिर स्तोत्र' की रचना से भक्ति का मार्ग मुखरित हुआ है।

आदि–ब्रह्मा, आदि–तीर्थंकर, धर्मप्रवर्तक, भगवान आदिनाथ स्वामी की भक्ति, सर्वसौख्य–शांति व शास्वतपद–प्रदाता है। समायानुकूल भक्ति–रस की पावन धारा में परम पूज्य क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागर जी महाराज ने अनेक विधान–पूजन रचनाओं के साथ प्रस्तुत 'आदिनाथ विधान' की रचना करके हम सभी भव्यजनों को उपकृत किया है। आचार्यश्री अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी संत हैं। धर्म की प्रभावना और धार्मिक जनों की कल्याण भावना से ही आचार्यश्री की लेखनी से अनेक विधानों की रचना प्रस्फुटित हुई है। इस विधान में ऋद्धि मंत्रों के समायोजन से यह कृति अपने आप में महत्त्वपूर्ण बन गयी है। श्रद्धालु भक्तजन इस विधान को विधिपूर्वक आयोजित करके इच्छित फल की प्राप्ति कर सकते हैं। पूजन भक्ति से परिणामों में शुद्धता आती है। अशुभ कर्मों का क्षय होता है और शुभ कर्मों के बंध से परिणामों में उज्वलता आना सहज है। भगवान आदिनाथ के चरणों में प्रार्थना है कि आचार्यश्री की लेखनी इसी प्रकार कल्याणकारी बनती रहे। आचार्यश्री रत्नत्रय की प्रबल साधना से लक्ष्य को प्राप्त करें – ऐसी विनम्र भावना।

अन्त में परम पूज्य क्षमामूर्ति, साहित्य रत्नाकर, पंचकल्याणक प्रभावक, 108 श्री विशदसागर जी महाराज के चरणों में शत–शत नमन, वंदन, त्रि–नमोस्तु।

चरण रज

प्रतिष्ठाचार्य : पं. विमलकुमार जैन (बनेठा)
5/216, मालवीय नगर, जयपुर. मो. 9829195197

मुक्तक

नीलांजना का मरण देख आदिराज संत हो गये।
शुभ ध्यान करके अर्हं का अर्हन्त हो गये।।
आदि धर्म प्रवर्तक हुए हैं, भगवान आदिनाथ।
भवि जीवों के भाग्य विधाता, भगवन्त हो गये।।

भजन

तुम दाता हो सबके, हम सुनकर आये हैं।
अरदास प्रभु चरणों, हम अपनी लाए हैं।।
जो भाव सहित आते, इच्छित फल पाते हैं।
पूजा के फल से कभी, खाली नहिं जाते हैं।।
हमने जग में रहकर, बहु धोखे खाए हैं।। तुम दाता ...।।1।।

प्रभु धन या भोगों की, न चाह हमारी है।
अब मुक्ति पाने की, प्रभु मेरी बारी है।।
हमने अन्तिम अपने, यह भाव बनाए हैं।। तुम दाता ...।।2।।

दु:खियों के दु:खहर्त्ता, हे नाथ कहाते हो।
भवि जीवों को भगवन्, भव पार लगाते हो।।
हम आशा लेकर के, तव द्वारे आए हैं।। तुम दाता ...।।3।।

इक गाँवपति सबके, कष्टों को हरता है।
जो भी फरियाद करे, वह पूरी करता है।।
तुम हो स्वामी सबके, हम आश लगाए हैं।। तुम दाता ...।।4।।

ना मिला हमें कोई, सबको अजमाया है।
जिनको अपना माना, कोई काम न आया है।।
अब 'विशद' चरण तुमरे, हमने अपनाए हैं।। तुम दाता ...।।5।।

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन्!
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् ! हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्!
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
मेरा अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यः संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योऽक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योऽष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्योऽनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य (9, 27 या 108 बार)

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा – **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...
सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...
पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई ।। जि...
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...
घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा

नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद :

श्री आदिनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्तशरण में आकर के, प्रभु करते उर से आह्वानन्।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ प्रहाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानं।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीर नीर सम जल अति निर्मल, रत्न कलश भर लाए हैं।
जन्म मृत्यु का रोग नशाने, तव चरणों में आए हैं।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनि की गंध मनोहर, मन मयूर प्रमुदित करती।
भव आताप निवारण करके, सरल भावना से भरती।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ जी अष्टापद से, अक्षय निधि को पाए हैं।
अक्षय निधि को पाने हेतु, अक्षय अक्षत लाए हैं।।

हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

क्षणभंगुर जीवन की कलिका, क्षण-क्षण में मुरझाती है।
काम वेदना नशते मन की, चंचलता रुक जाती है।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर श्री आदि प्रभु ने, एक वर्ष उपवास किए।
त्याग किए नैवेद्य सभी वह, क्षुधा वेदना नाश किए।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का दीपक जगमग जलकर, बाहर का तम हरता है।
ज्ञान दीप जलकर मानव को, पूर्ण प्रकाशित करता है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की ज्वाला में जलकर, हमने संसार बढ़ाया है।
प्रभु तप अग्नि में कर्मों की, शुभ धूप से धूम उड़ाया है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोक्ष सुख से हम वंचित, मोक्ष महाफल दान करो।
श्री फल अर्पित करता हूँ प्रभु, शिव पद हमें प्रदान करो।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म का नाश करो प्रभु, अष्ट गुणों को पाना है।
अर्घ्य समर्पित करता हूँ प्रभु, अष्टम भूपर जाना है।।
हृदय कमल में आन विराजो, सुरभित सुमन बिछाते हैं।
आदिनाथ प्रभु के चरणों हम, सादर शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

दूज कृष्ण आषाढ़ माह की, मरुदेवी उर अवतारे।
रत्नवृष्टि छह माह पूर्व कर, इन्द्र किए शुभ जयकारे।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, नगर अयोध्या जन्म लिया।
नाभिराय के गृह इन्द्रों ने, आनंदोत्सव महत् किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत्र कृष्ण नौमी को प्रभु ने, राग त्याग वैराग्य लिया।
संबोधन करके देवों ने, भाव सहित जयकार किया।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

फाल्गुन बदि एकादशी को प्रभु, कर्म घातिया नाश किए।
लोकोत्तर त्रिभुवन के स्वामी, केवलज्ञान प्रकाश किए।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी को, प्रभु ने पाया पद निर्वाण।
सुर नर किन्नर विद्याधर ने, आकर किया विशद गुणगान।।
आदिनाथ स्वामी के चरणों, अर्घ्य चढ़ाऊँ शुभकारी।
मुक्ति पथ पर बढ़ूँ हमेशा, सर्व जगत् मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थंकर विशेष वर्णन

नाभिराय मरूदेवि के नन्दन, वृषभनाथ प्रभु जगत महान्।
नगर अयोध्या जन्म लिये हैं, अष्टापद गिरि से निर्वाण।।
तीर्थंकर पद पाने वाले, जगत विभु कहलाते नाथ।
पद पंकज मैं विशद भाव से, झुका रहे हम अपना माथ।।

ॐ ह्रीं ऋषभ देवस्य जन्म स्थान जनक जननी निर्वाण क्षेत्रेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच सहस योजन ऊँचाई, बारह योजन गोलाकार
तप्त स्वर्ण सम समवशरण में, आदिनाथ शोभें मनहार।
गंध कुटी में दिव्य कमल पर, सिंहासन है अतिशयकार।
जिस पर श्री जिन अधर विराजे, दर्शन देते मंगलकार।।

ॐ ह्रीं ऋषभ देवस्य समवशरण अवगाहना देह वर्णेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

आयु लाख चौरासी पूरव की, है प्रभु छयालिस गुणवान्।
धनुष पाँचसौ है ऊँचाई ऋषभ चिन्ह पाए भगवान।।
दिव्य देशना देकर करते, श्री जिन भक्तों का कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाकर भाव सहित हम, करते श्री जिन का गुणगान।।

ॐ ह्रीं ऋषभ देवस्य आयु देहोत्सेध लक्षणेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभ नाथ के समवशरण में, 'वृषभसेन' गणधर स्वामी।
अन्य मुनीश्वर ऋद्धीधारी, हुए मोक्ष के अनुगामी।।
दु:ख हर्त्ता सुख कर्त्ता ऋषिवर, हुए जहाँ में करूणाकार।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, वन्दन करते हम शत् बार।।

ॐ ह्रीं इ्वीं श्रीं अर्हं अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नम: श्री वृषभनाथस्य 'वृषभसेनादि' चतुरशीति गणधरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – आदिनाथ की भक्ति कर, भक्तामर स्तोत्र।
मानतुंग आचार्य ने दिया, धर्म का स्रोत।।
सुर नर पशु अनगार मुनि यति, गणधर जिनको ध्याते हैं।
श्री आदिनाथ भगवान आपकी, महिमा भक्तामर गाते हैं।।

जो चरण वंदना करते हैं, वह सुख शांति को पाते हैं।
जो पूजा करते भाव सहित, उनके संकट कट जाते हैं।।
तुमने कलिकाल के आदि में, तीर्थंकर बन अवतार लिया।
इस भरत भूमि की धरती का, आकर तुमने उपकार किया।।
जब भोगभूमि का अंत हुआ, लोगों को यह आदेश दिया।
षट्कर्म करो औ कष्ट हरो, जीवों को यह संदेश दिया।।
तुमने शरीर निज आतम के, शाश्वत स्वभाव को जाना है।
नश्वर शरीर का मोह त्याग, चेतन स्वरूप पहिचाना है।।
तुमने संयम को धारण कर, छह माह का ध्यान लगाया है।
ले दीक्षा चार सहस्त्र भूप, उनको भी वन में पाया है।।
जब क्षुधा तृषा से अकुलाए, फल फूल तोड़ने लगे भूप।
तब हुई गगन से दिव्य गूंज, यह नहीं चले निर्ग्रंथ रूप।।
फिर छाल पात कई भूपों ने, अपने ही तन पर लपटाई।
तब खाने पीने की विधियाँ, उन लोगों ने कई अपनाई।।
जब चर्या को निकले, भगवन्, तब विधि किसी ने न जानी।
छह सात माह तक रहे घूमते, आदिनाथ मुनिवर ज्ञानी।।
राजा श्रेयांस ने पूर्वाभास से, साधु चर्या को जान लिया।
पड़गाहन करके आदिराज को, इच्छुरस का दान दिया।।
विधि दिखाकर आदि प्रभु ने, मुनि चर्या के संदेश दिए।
अक्षय हो गई अक्षय तृतिया, देवों ने पंचाश्चर्य किए।।

प्रभुवर ने शुद्ध मनोबल से, निज आतम ध्यान लगाया है।
चउ कर्म घातिया नाश किए, शुभ केवलज्ञान जगाया है।।
देवों ने प्रमुदित भावों से, शुभ समवशरण था बनवाया।
सौधर्म इन्द्र परिवार सहित, प्रभु पूजन करने को आया।।
सुर नर पशुओं ने जिनवर की, शुभ वाणी का रसपान किया।
श्रद्धान ज्ञान चारित पाकर, जीवों ने स्वपर कल्याण किया।।
कैलाश गिरि पर योग निरोध कर, सब कर्मों का नाश किया।
फिर माघकृष्ण चौदस को प्रभु ने, मोक्ष महल में वास किया।।
तब निर्विकल्प चैतन्य रूप, शिव का स्वरूप प्रभु ने पाया।
अब उस पद को पाने हेतु, प्रभु विशद भाव मन में आया।।
जो शरण आपकी आता है, वह खाली हाथ न जाता है।
जो भक्तिभाव से गुण गाता है, वह इच्छित फल को पाता है।।
हे दीनानाथ ! अनाथों के, हम पर भी कृपा प्रदान करो।
तुमने मुक्ति पद को पाया, वह 'विशद' मोक्ष फल दान करो।।

(आर्या छन्द)

हे आदिनाथ ! तुमको प्रणाम, हे ज्ञानसरोवर ! मुक्ति धाम।
हे धर्म प्रवर्तक ! तीर्थंकर, शिवपद दाता तुमको प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – आदिनाथ को आदि में, कोटि-कोटि प्रणाम।
'विशद' सिंधु भव सिंधु से, पाऊँ मैं शिवधाम।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

(प्रथम वलय:)

दोहा – षट्कर्मों का दे गये, आदिनाथ उपदेश।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने निज स्वदेश।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्तशरण में आकर के, प्रभु करते उर से आह्वानन्।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ प्रहाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

कल्पवृक्ष जब लुप्त हुए तो, नर पशु व्याकुल हुए विशेष।
भोग भूमि के अन्त में प्रभुजी, 'असिकर्म' का दे संदेश।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं असि कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कमी धान्य की हो जाने पर, छीना झपटी हुई विशेष।
बँटवारा कर शांत किए वह, 'मसि कर्म' का दे संदेश।।

जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं मसिकर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नष्ट धान्य के हो जाने पर, जीव दुखी फिर हुए विशेष।
धान्य उगाओ मेहनत करके, 'कृषि कर्म' दीन्हा संदेश।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं कृषि कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वस्तु अदल बदल कर विनिमय, देशान्तर से करो विशेष।
प्रभु 'वाणिज्य कर्म' का दीन्हे, जग जीवों को भी संदेश।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं वाणिज्य कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भांति-भांति की 'कला' सिखाए, भवि जीवों को प्रभु विशेष।
करो आजीविका इससे प्राणी, दीन्हें जग को यह संदेश।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं कला कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

काष्ट धातु पाषाणादि में, 'शिल्प कला' का दे संदेश।
जग जीवों को ज्ञान सिखाए, जीवन चर्या के अवशेष।।

जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण।।6।।

ॐ ह्रीं शिल्प कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का दीन्हें प्रभु संदेश।
जीवन जीने को जीवों ने, हेतु पाए अन्य विशेष।।
जीवन चर्या की शिक्षा दे, किये जगत का प्रभु कल्याण।
अर्घ्य चढ़ाते आदिनाथ पद, पाने को हम भी निर्वाण।।7।।

ॐ ह्रीं षट्कर्म शिक्षा प्रदायक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(द्वितीय वलय:)

दोहा – द्वादश तप पाए प्रभु, आदिनाथ जिनराज।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, शिव पद पाने आज।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्तशरण में आकर के, प्रभु करते उर से आह्वानन्।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ प्रहाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जीत रहे जो सर्व कषाएँ, करते विषयों का संहार।
क्षुधा वेदना जीत रहे हैं, चतुर्विधि त्यागें आहार।।
अनशन तप का पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान।
आदिनाथ के पद में वन्दन, करके हम करते गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं अनशन तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भूख से कम आधा चौथाई, एक ग्रास लेते आहार।
उत्तम मध्यम जघन्य रूप से, होता है जो तीन प्रकार।।
ऊनोदर तप पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान।
आदिनाथ के पद में वन्दन, करके हम करते गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चर्या को आहार हेतु जो, व्रत संख्यान करके जावें।
लाभालाभ में तोष रोष नहिं, साम्य भाव मन में पावें।।
व्रत परिसंख्यान पालते हैं तप, कर्म निर्जरा किए महान।
आदिनाथ के पद में वन्दन, करके हम करते गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं व्रत परिसंख्यान तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कभी एक दो तीन रसों का, छोड़-छोड़ करते आहार।
कभी चार रस कभी पाँच का, कभी छोड़ते सर्व प्रकार।।
रस परित्याग का पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान।
आदिनाथ के पद में वन्दन, करके हम करते गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अनाशक्त रहते विविक्त जो, शैयाशन से तप करते।
शान्त भाव से रहते हैं जो, बाधाओं से नहीं डरते।।

विविक्त शैयाशन पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान।
आदिनाथ के पद में वन्दन, करके हम करते गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं विविक्त शय्यासन तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

तन से रहा ममत्व भाव जो, धीरे-धीरे छोड़ रहे।
आत्म ध्यान में रत रह करके, चेतन से नाता जोड़ रहे।।
कायोत्सर्ग तप पालन करते, कर्म निर्जरा किए महान।
आदिनाथ के पद में वन्दन, करके हम करते गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं कायोत्सर्ग तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गमनागमन आदि चर्या में, हो प्रमाद से प्राणी घात।
लेते हैं प्रायश्चित स्वयं ही, करते दोषों का संघात।।
प्रायश्चित तप पालन करते, करते कर्मों का खण्डन।
आदिनाथ प्रभु के चरणों में, करते हम शत्-शत् वन्दन।।7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चारित्र रूप, शुभ और विनय उपचार कहा।
यथा योग्य आदर करना ही, इनका विनयाचार रहा।।
विनय सु तप का पालन करते, करते कर्मों का खण्डन।
आदिनाथ प्रभु के चरणों में, करते हम शत्-शत् वन्दन।।8।।

ॐ ह्रीं विनय तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

साधू करें साधना अपनी, उसमें कोइ बाधा आवे।
दूर करें नि:स्वार्थ भाव से, वैयावृत्ति कहलावे।।
वैयावृत्ति सु तप पालते, करते कर्मों का खण्डन।
आदिनाथ प्रभु के चरणों में, करते हम शत्-शत् वन्दन।।9।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्ति तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुबह शाम दिन रात निरन्तर, स्वाध्याय में रहते लीन।
पठन पृच्छना अरु अनुप्रेक्षा, आम्नाय उपदेश प्रवीन।।
स्वाध्याय तप पालन करते, करते कर्मों का खण्डन।
आदिनाथ प्रभु के चरणों में, करते हम शत्-शत् वन्दन।।10।।

ॐ ह्रीं स्वाध्याय तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होवे यदि उपसर्ग परीषह, शांत भाव से सहते हैं।
आत्म ध्यान में लीन रहें नित, मोह त्याग कर रहते हैं।।
व्युत्सर्ग तप पालन करते, करते कर्मों का खण्डन।
आदिनाथ प्रभु के चरणों में, करते हम शत्-शत् वन्दन।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चिंतन मनन ध्यान जप में जो, रहते हैं निशदिन लवलीन।
आत्म ध्यान नित करें भाव से, होते सम्यक् ज्ञान प्रवीन।।
ध्यान सु तप का पालन करते, करते कर्मों का खण्डन।
आदिनाथ प्रभु के चरणों में, करते हम शत्-शत् वन्दन।।12।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वादश तप को तपने वाले, करते कर्मों का संहार।
केवल ज्ञान प्रकट करते फिर, सारे जग में अपरम्पार।।
आदि प्रभु ने संयम धारण, करके किया आत्म कल्याण।
शीश झुका हम वन्दन करते, रत्नत्रय का दो प्रभु दान।।13।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(तृतीय वलयः)

दोहा – सोलह कारण भावना, प्रतिहार्य के अर्घ्य।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, पाने सुपद अनर्घ्य।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्तशरण में आकर के, प्रभु करते उर से आह्वानन्।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ प्रहाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सप्त तत्त्व छह द्रव्य गुणों में, श्रद्धा उर धरना।
मिथ्या भाव छोड़कर सम्यक्, रुचि प्राप्त करना।।
शंकादि दोषों को तजकर, भेद ज्ञान पाना।
दरश विशुद्धि गुणीजनों ने, या को ही माना।।
तीर्थंकर पद पाने हेतु, श्री जिन को ध्याते।
भव्य भावना भाते हैं हम, चरणों सिर नाते।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उच्च गोत्र का कारण बन्धु, मृदुल भाव गाया।
पुण्य पुरुष होता है जिसने, विनय भाव पाया।।

विशद विनय सम्पन्न भावना, भाव सहित गाये।
तीर्थंकर सा पद पाकर के, सिद्ध शिला जाये।।
तीर्थंकर पद पाने हेतु, श्री जिन को ध्याते।
भव्य भावना भाते हैं हम, चरणों सिर नाते।।2।।

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्न भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

कृत कारित अरु अनुमोदन से, मन-वच-तन द्वारा।
नव कोटी से शील व्रतों का, पालन हो प्यारा।।
सोलहकारण शुभम् भावना, भाव सहित भावे।
अनतिचार व्रत शील से अपना, जीवन महकावे।।
तीर्थंकर पद पाने हेतु, श्री जिन को ध्याते।
भव्य भावना भाते हैं हम, चरणों सिर नाते।।3।।

ॐ ह्रीं अनतिचार शीलव्रत भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अजर अमर पद पाने हेतु, ज्ञान सुधामृत पाना।
ॐकार मय जिनवाणी के, शुभ छन्दों को गाना।।
ज्ञान योग होता अभीक्ष्ण, यह शुद्ध भाव से ध्याना।
'विशद्' ज्ञान के द्वारा भाई, सिद्ध शिला को पाना।।
तीर्थंकर पद पाने हेतु, श्री जिन को ध्याते।
भव्य भावना भाते हैं हम, चरणों सिर नाते।।4।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण को, सम्यक् धर्म कहा।
मोक्ष महल का सम्यक् साधन, अनुपम यही रहा।।
धर्म और उसके फल में जो, हर्ष भाव आवे।

सु संवेग भाव शास्त्रों में, ये ही कहलावे ।।
तीर्थंकर पद पाने हेतु, श्री जिन को ध्याते ।
भव्य भावना भाते हैं हम, चरणों सिर नाते ।।5।।

ॐ ह्रीं संवेग भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

पर परिणत से बचकर हमको, निज निधि को पाना ।
छोड़ विकल्पों को अब सारे, निज को ही ध्याना ।।
यथाशक्ति जो त्याग करे, वह मोक्ष मार्ग जानो ।
जैनागम में त्याग शक्तिस:, इसी तरह मानो ।।
तीर्थंकर पद पाने हेतु, श्री जिन को ध्याते ।
भव्य भावना भाते हैं हम, चरणों सिर नाते ।।6।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

पल-पल करके नर जीवन का, समय निकल जाता ।
इन्द्रियरोध किये बिन भाई, मिले ना सुख साता ।।
इच्छाओं का दमन करे, फिर महामंत्र जपना ।
यथा शक्ति तप करना भाई, शक्तिस: तपना ।।
तीर्थंकर पद पाने हेतु, श्री जिन को ध्याते ।
भव्य भावना भाते हैं हम, चरणों सिर नाते ।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तप भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

जन्म मरण होता है तन का, चेतन है ज्ञाता ।
कर्म करेगा जैसा प्राणी, वैसा फल पाता ।।
चेतन का ना अंत है कोई, ना ही आदी है ।
श्रेष्ठ मरण औ सत् अनुभूति, साधु समाधि है ।।

यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाएँ ।।8।।

ॐ ह्रीं साधु समाधि भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

साधक करें साधना अपनी, संयम के द्वारा ।
रत्नत्रय अपने जीवन से, जिनको है प्यारा ।।
विघ्न साधना में कोई भी, उनकी आ जावे ।
वैय्यावृत्ति विघ्न दूर, करना ही कहलावे ।।
यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाएँ ।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

अर्हत् होते हैं इस जग में, सद्गुण के दाता ।
अत: सार्व कहलाए भगवन्, भविजन के त्राता ।।
हो अनुराग गुणों में उनके, भाव सहित भाई ।
अर्हत् भक्ति गुणीजनों ने, इसी तरह गाई ।।
यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाएँ ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हत् भक्ति भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

सत् संयम की इच्छा करके, गुरु के गुण गाते ।
भाव सहित वंदन करने को, चरणों में जाते ।।
गुरु चरणों की भक्ति जग में, होती सुख दानी ।
गुणियों ने आचार्य भक्ति शुभ, इसी तरह मानी ।।

यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाएँ।।11।।

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

करते हैं उपदेश धर्म का, जो मंगलकारी।
संत दिगम्बर और निरम्बर, नीरस आहारी।।
उपाध्याय को जग भोगों से, पूर्ण विरक्ति है।
भाव सहित गुण गाना उनके, बहुश्रुत भक्ति हैं।।
यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाएँ।।12।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत (उपाध्याय) भक्ति भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सप्त तत्त्व झंकृत होते हैं, जिनवाणी द्वारा।
दिव्य देशना निःसृत होती, जैसे जलधारा।।
जिस वाणी से जागृत होवे, चेतन शक्ति है।
विशद ज्ञान में वर्णित पावन, प्रवचन भक्ति है।।
यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाएँ।।13।।

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ति भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

होते क्या कर्त्तव्य हमारे, उनको पाना है।
व्रत संयम से जीवन अपना, हमें सजाना है ।।
कर्त्तव्यों के पालन हेतु, भावों से भरना।
आवश्यकाऽपरिहार भावना, सम्पूरण करना।।

यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाएँ।।14।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहारिणी भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

महिमा अगम है जिन शासन की, कैसे उसे कहें।
संयम तप श्रद्धा भक्ति में, हरपल मगन रहें।।
मोक्ष मार्ग औ जैन धर्म की, महिमा जो गाई।
पथ प्रभावना सत् संतों ने, जग में फैलाई।।
यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाएँ।।15।।

ॐ ह्रीं मार्ग प्रभावना भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वेष भाव के द्वारा हमने, कितने कष्ट सहे।
मद माया की लपटों में हम, जलते सदा रहे।।
सदियाँ गुजर गयी हैं लेकिन, धर्म नहीं पाया।
चेतन की यह भूल रही अरु, रही मोह माया।।
यही भावना भाते हैं हम, जिन पद को पाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु के गुण गाएँ।।16।।

ॐ ह्रीं प्रवचन वत्सलत्व भावना प्राप्त धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

शम्भू छन्द

प्रातिहार्य है शोक निवारी, तरु अशोक कहलाता है।
रत्नों से सज्जित है अनुपम, सबके मन को भाता है।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।17।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु सत् प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इन्द्र पुष्प वृष्टि करते हैं, समवशरण में अतिशयकार।
मन मोहक शुभ गंध फैलती, चतुर्दिशा में विस्मयकार।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।18।।

ॐ ह्रीं सुर पुष्प वृष्टि प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रभु की दिव्य देशना अनुपम, सब भाषा मय मंगलकार।
ॐकार मय प्रहसित होती, चतुर्दिशा में बारम्बार।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।19।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौसठ चँवर ढौरते अतिशय, यक्ष खड़े हो द्वार महान।
अतिशय महिमा दिखलाते हैं, नमन करें करके गुणगान।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।20।।

ॐ ह्रीं चँवर प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रत्न जड़ित सिंहासन सुन्दर, मन को मोहित करे अहा।
अधर विराजे जिस पर श्री जिन, जैनागम में यही कहा।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।21।।

ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भामण्डल की महिमा अनुपम, अतिशय कारी रही महान।
सप्त भवों की दिग्दर्शक है, जिसका कौन करे गुणगान।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।22।।

ॐ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मन को आह्लादित करती है, देव दुन्दुभि अतिशयकार।
करती है गुणगान प्रभु का, जड़ होकर भी श्रेष्ठ अपार।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।23।।

ॐ ह्रीं दुन्दुभि प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दर्शाते छत्रत्रय प्रभुता, श्री जिनेन्द्र की महिमावन्त।
तीन लोक के अधिनायक प्रभु, तीर्थंकर हैं यह भगवंत।।
कान्तिमान आभा से अनुपम, शोभित होते अपरम्पार।
समवशरण में आदि प्रभु के, चरणों वन्दन बारम्बार।।24।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दिव्य भावना सोलह कारण, भव्य जीव जो भाते हैं।
केवल ज्ञान प्राप्त करते, वह, प्रातिहार्य प्रगटाते हैं।।
समवशरण की रचना करते, इन्द्र सभी मिल अपरम्पार।
चरण वन्दना करते हैं सब, विशद भाव से बारम्बार।।25।।

ॐ ह्रीं सोलह कारण भावना अष्ट प्रातिहार्य सहित धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चतुर्थ वलय:)

सोरठा – णमो जिणाणं आदि, ऋषिवर पावें ऋद्धियां।
पाने मरण समाधि, पुष्पाञ्जलि करते विशद।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

हे ज्ञानमूर्ति करुणा निधान !, हे धर्म दिवाकर करुणाकर !
हे तेज पुंज ! हे तपोमूर्ति !, सन्मार्ग दिवाकर रत्नाकर।।
हे धर्म प्रवर्तक आदिनाथ, तव चरणों में करते वंदन।
यह भक्तशरण में आकर के, प्रभु करते उर से आह्वानन्।।
हम भव सागर में भटक रहे, अब तो मेरा उद्धार करो।
श्री वीतराग सर्वज्ञ प्रहाप्रभु, भव समुद्र से पार करो।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

'णमो जिणाणं' श्री जिनेन्द्र को, विशद भाव से करूँ नमन्।
केवल ज्ञान ऋद्धि के धारी, श्री जिनेन्द्र को शत वन्दन।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्मप्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो ओहि जिणाणं' कहकर, अवधि ज्ञान का करूँ मनन।
अवधि ज्ञान के धारी मुनिवर, के चरणों में हो वन्दन।।

धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्मप्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कहकर 'णमो परमोहि जिणाणं', परमावधि का होय यतन।
परम साधना करने वाले, मुनि के चरणों में वन्दन।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं विशिष्ट ऋद्धिधारक धर्मप्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बोल 'णमो सव्वोहि जिणाणं' सर्वावधि पाय जो ज्ञान।
श्रेष्ठ ऋद्धि के धारी मुनिवर, सर्व लोक में रहे महान।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्मप्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ॐ 'णमो अणंतोहि जिणाणं' की महिमा है अपरम्पार।
श्रेष्ठ ज्ञान धारी मुनिपद में, वन्दन मेरा बारम्बार।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो कोट्ठ बुद्धीणं' पद से, कोट्ठ बुद्धिधारी जिन संत।
उनके चरणों वन्दन करके, हो जाए कर्मों का अंत।।

धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो बीज बुद्धीणं' पद में, बीज बुद्धि ऋद्धि धारी।
श्रेष्ठ साधना करते मुनिवर, मन से होकर अविकारी।।
धर्म प्रवर्तक आदिनाथ की, गौरव गाथा गाते हैं।
विशद योग से युगल चरण में, सादर शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो पादाणुसारीणं' पादाणु सारिणी ऋद्धिवान।
तप बल से यह ऋद्धि पाते, स्वयं जगाते हैं उपमान।।
आदिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, गौरव गाथा गाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पादाणुसारीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो संभिण्ण सोदारणं', सम्भिन्न श्रोतृत्व के धारी।
उनके चरणों वन्दन करते, हम भी होकर अविकारी।।
आदिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, गौरव गाथा गाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं णमो संभिण्ण सोदारणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो सयं बुद्धाणं' कहकर, स्वयं बुद्धि ऋद्धि धारी।
मुनिवर के चरणों में वन्दन, करते हम मंगलकारी।।

आदिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, गौरव गाथा गाते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो पत्तेय बुद्धाणं' कहकर, प्रत्येक बुद्धि ऋद्धि पाऊँ।
श्रेष्ठ साधना करूँ भाव से, इस भव से मुक्ति पाऊँ।।
आदिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, गौरव गाथा गाते हैं।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो बोहिय बुद्धाणं' कहते, बोधि पाने हेतु महान।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, उनका हम करके गुणगान।।
आदिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, गौरव गाथा गाते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो उजू मदीणं' कहके, ऋजु मति मन: पर्यय ज्ञान।
परम साधना करने वाले, मोक्षमहल में करें प्रणाम।।
आदिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, गौरव गाथा गाते हैं।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजू मदीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कहके 'णमो विउल मदीणं', विपुल मति पा लेते ज्ञान।
आतम ध्यान लगाने वाले, पा जाते हैं केवल ज्ञान।।

आदिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, गौरव गाथा गाते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो दश पुव्वीणं' कह, दश पूर्वों का पाऊँ ज्ञान।
विशद भाव से जिन मुद्रा का, करता रहूँ नित्य मैं ध्यान।।
आदिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, गौरव गाथा गाते हैं।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दश पुव्वीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो चउदश पुव्वीणं', चौदह पूर्वों के धारी।
मुनिवर की शुभ करें वन्दना, होकर हम भी अविकारी।।
आदिनाथ के चरण कमल में, सादर शीश झुकाते हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, गौरव गाथा गाते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदश पुव्वीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(सोरठा)

णमो अट्ठंग महा, निमित्त कुशलाणं जानिए।
महा निमित्तक ज्ञान, मुनिवर पाते मानिए।।
करते हम कर जोर, वन्दन उनके चरण में।
होके भाव विभोर, शिव पद पाने के लिए।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंग महानिमित्त कुशलाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चाल टप्पा)

णमो विउव्व इड्ढिं पत्ताणं', ऋद्धिधर स्वामी।
ऋद्धि सिद्धि का दान हमें दो, मुक्ति पथ गामी।।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी।
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्व इड्ढिं पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ध्याऊँ 'णमो विज्जाहराणं', ऋद्धिधर नामी।
इसको पाने वाला बनता, मुक्ति पथ गामी।।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी।
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो चारणाणं' ऋद्धिधर, हैं त्रिभुवन नामी।
उनकी भक्ति करने वाला, हो उसका स्वामी।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी।
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो पण्ण समणाणं' जानो, मुक्ति पथ गामी।
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि के धारी, हैं त्रिभुवन नामी।।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी।
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण समणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो आगास गामीणं' वाले, ऋद्धि के स्वामी।
गगन गमन करते हैं भाई, मुक्ति पथगामी।।
मुनीश्वर हे अन्तर्यामी।
सम्यक् तप को पाने वाले, त्रिभुवन के स्वामी।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गामीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो आसी विसाणं' ऋद्धि, मुनिवर ने पाई।
श्रेष्ठ ऋद्धि को धार गुरु ने, प्रभुता दिखलाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदायी।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी विसाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो दिट्ठी विसाणं', ऋद्धि मुनिवर ने पाई।
मरण देखते होय जीव का, देखें न भाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदायी।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठी विसाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो उग्ग तवाणं' जानो, ऋद्धि यह भाई।
उग्र तपों को पाते मुनिवर, यह ऋद्धि पाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदायी।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्ग तवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो दित्त तवाणं' ऋद्धि, से मुनीवर भाई।
दीप्त तपों को अतिशय तपते, मुनीवर सुखदायी।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदायी।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो तत्त तवाणं' ऋद्धि, से ऋषिवर भाई।
कठिन-कठिन तप करके मुनिवर, अतिशय दिखलाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदायी।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'णमो महा तवाणं' ऋद्धि, पाकर के भाई।
उत्तम से उत्तम तप तपते, हैं ऋषि सुखदायी।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदायी।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर तवाणं' ऋद्धि, ऋषिवर जो पाई।
घोर परीषह सहकर भी मुनि, तप करते भाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदायी।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

'णमो घोर गुणाणं' जानो, ऋद्धि सुखदायी।
श्रेष्ठ गुणों को पाते ऋषिवर, ऋद्धि यह पाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदायी।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर परक्कमाणं' यह, ऋद्धि सुखदायी।
घोर पराक्रम पाते मुनिवर, यह ऋद्धि पाई।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदायी।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो घोर गुण बंभयारीणं', ऋद्धि धर भाई।
घोर ब्रह्मचर्य पालन करते, अतिशय सुखदायी।।
मुनीश्वर पूजों हो भाई।
सम्यक् तप को पाने वाले, ऋषिवर सुखदायी।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण बंभयारीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चाल-छन्द

'णमो आमोसहि पत्ताणं' बोल बोल मैटो सब गम।
आमर्षौषधि के धारी, ऋषिवर जग में उपकारी।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो खेल्लोसहि पत्ताणं', ऋद्धि पाकर मैटो गम।
थूक लार मुख के न्यारे, रोग नशाते हैं सारे।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो जल्लोसहि पत्ताणं' मोह त्याग कर धारो सम।
ऋषि के तन का जल्ल अहा, रोग मेटता पूर्ण रहा।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि विशिष्ट पत्ताणं ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो विप्पोसहि पत्ताणं', ऋद्धि होती है सक्षम।
मल औषधि बन जाता है, सारे रोग नशाता है।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो सव्वोसहि पत्ताणं', पाते हैं जो धारें यम।
सर्वोषधि ऋद्धि धारी, व्याधि मेटते हैं सारी।।
मुनि की जय जयकार करो, चरणों में नित शीश धरो।
उनका जो भी ध्यान करें, आतम का कल्याण करें।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शेर-छन्द

'णमो मण बलीणं' यह, ऋद्धि पाए हैं।
मन बल से श्रेष्ठ ऋद्धि, ऋषिवर जगाए हैं।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मण बलीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो बचि बलीणं', यह ऋद्धि जानिए।
वचनों में शक्ति मिलती, ऋषि को ये मानिए।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचि बलीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो काय बलीणं', इस ऋद्धि के धनी।
पाते हैं मुनि शक्ति, ऋद्धि से अति घनी।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो काय बलीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो खीर सवीणं', यह ऋद्धि जो पाए।
रुखा आहार कर में, शुभ क्षीर सा बनाए।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर सवीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो सप्पि सवीणं', इस ऋद्धि के धारी।
रुखा आहार पाते, शुभ घृत सम भारी।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो महुर सवीणं', यह ऋद्धि जानिए।
मधुर आहार रुक्ष भी, हो जाए मानिए।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो अमिय सवीणं', यह ऋद्धि पाए हैं।
आहार रुक्ष अमृत, जैसा बनाए हैं।।
ऋषि के चरण का वन्दन, करते जो भाव से।
संसार पार वे हों, संयम की नाव से।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिय सवीणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

आर्या-छन्द

'णमो अक्खीण महाणसाणं', यह ऋद्धि है अतिशयकारी।
कम न हो आहार जहाँ पर, भोजन लेवें अनगारी।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो वड्ढमाणाणं' यह, ऋद्धि मुनिवर ने पाई।
केवल ज्ञान प्राप्त होने तक, ऋद्धि बढ़ती सुखदायी।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'ॐ णमो सिद्धायदणाणं' यह, ऋद्धि ऋषिवर जी पाते।
सिद्धायतन के दर्श मुनि को, बैठे-बैठे हो जाते।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धाय दणाणं विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'णमो भयवदोमहदि महावीर वड्ढमाणं, बुद्धि ऋद्धि धारी।
वर्द्धमान महावीर प्रभु सम, बन जाते हैं अविकारी।।
जिन मुनि की पूजा करने यह, द्रव्य सजाकर लाए हैं।।
भक्ति भाव से शीश झुकाकर, वन्दन करने आए हैं।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदोमहदि महावीर वड्ढमाणं बुद्धि विशिष्ट ऋद्धिधारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गणधर वलय में णमो जिणाणं, आदि ऋद्धियाँ कहीं महान।
अड़तालिस यह मंत्र श्रेष्ठ हैं, भाव सहित कीन्हा गुणगान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम शत-शत् वन्दन।
मुक्ति पद को प्राप्त करें हम, किया भाव से यह अर्चन।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं आदि विशिष्ट ऋद्धि धारक धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप : ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐम् अर्हं श्री ऋषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

समुच्चय जयमाला

धर्म प्रवर्तक आदि जिन, मैटे भव जञ्जाल।
ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य के, हेतु कहूँ जयमाल।।

(चौपाई छन्द)

लोकालोक अनन्त बताया, जिनवाणी में ऐसा गाया।
तीन लोक उसमें शुभ गाए, ऊर्ध्व अधो अरु मध्य बताए।।
मध्य लोक उसका शुभ जानो, मध्य में जम्बूद्वीप बखानो।
उसमें भरत क्षेत्र शुभ गाया, धनुषाकार जिसे बतलाया।।
छह खण्डों में बँटा है भाई, पञ्च म्लेच्छ खण्ड सुखदायी।
आर्य खण्ड उसका शुभ जानो, मध्य में उसको तुम पहिचानो।।
परिवर्तन उसमें बतलाया, उत्सर्पिणी अवसर्पिणी गाया।
अति दुखमादि काल बताए, छह संख्या में जो कहलाए।।
अवसर्पिणी यह काल कहा है, हीन-हीनता रूप रहा है।
बल बुद्धि वैभव घट जाए, फिर भी मानव मान बढ़ाए।।
सुषमा दुषमा भाई गाया, तृतीय काल जिसे बतलाया।
एक लाख पूरब की जानो, तीन वर्ष वसु माह बखानो।।
पन्द्रह दिन इस काल के जानो, शेष काल के भाई मानो।
सर्वार्थसिद्धी से चय कीन्हे, नगर अयोध्या जन्म जो लीन्हे।।
नाभिराय के भाग्य जगाय, मरुदेवी को धन्य बनाये।
देवो ने उत्सव कर भारी, पूजा कीन्ही अतिशयकारी।।
पद युवराज आपने पाया, लोगों ने तब हर्ष मनाया।
हुई कल्पवृक्षों की हानि, व्याकुल हुए जगत के प्राणी।।
भूख प्यास ने उन्हें सताया, लोगों ने उत्पात मचाया।
रोते गाते चरणों आये, प्रभु से अपनी अर्ज सुनाए।।

प्रभु ने तब षट् कर्म बताए, प्राणी पाकर नाचे गाये।
आजीविका पाकर हर्षाए, जीवन सुखमय सभी बिताए।।
हुआ स्वयंवर उनका भाई, विधि सभी ने यह अपनाई।
लाख तिरासी पूरब जानो, भोग में बीती उनकी मानो।।
नीलाञ्जना ने मरण को पाया, प्रभु ने तब बैराग्य जगाया।
धर्म प्रवर्तक प्रभु कहलाये, मुक्ति का शुभ मार्ग दिखाए।।
प्रभु ने रत्नत्रय को पाया, कई राजाओं ने अपनाया।
छह महिने का ध्यान लगाया, जिन आतम को प्रभु ने ध्याया।।
विधि दान की प्रभु बताए, नृप श्रेयांस के भाग्य जगाए।
तीज शुक्ल वैशाख की पाई, अक्षय तृतीया जो कहलाई।।
प्रभु ने अतिशय ध्यान लगाया, क्षण में केवल ज्ञान जगाया।
समवशरण तब देव बनाए, प्रभु की दिव्य देशना पाए।।
मुक्ति पद को प्रभु ने पाया, सारे जग को मार्ग दिखाया।
हम भी यही भावना भाते, प्रभु पद सादर शीश झुकाते।।
मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ, कर्म नाशकर मुक्ति पाए।
यही भावना रही हमारी, मोक्ष मिले हमको अविकारी।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय-जय अनगारी, संयमधारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
जय ज्ञान पुजारी, अतिशयकारी, धर्म प्रवर्तक शिवकारी।।

ॐ ह्रीं धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(आडिल्य छन्द)

प्रथम जिनेश्वर आप, हुए यह जानिए। मोक्ष मार्ग की राह, बताए मानिए।।
भव भोगों की नहीं है, मन में चाहना। विशद मोक्ष पद पाएँ, है यह भावना।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

आरती श्री आदिनाथ जी की

(तर्ज – आज करें हम ...)

आज करें हम विशद भाव से, आरती मंगलकारी।..2
मणिमय दीपक लेकर-2 आये, आदिनाथ दरबार।।
हो जिनवर – हम सब उतारे मंगल आरती।

जन्म प्राप्त कर नगर अयोध्या, को प्रभु धन्य बनाया।
नाभिराय राजा मरुदेवी, ने सौभाग्य जगाया।।
हो जिनवर – हम सब उतारे मंगल आरती।।1।।

षट् कर्मों की शिक्षा देकर, सबके भाग्य जगाए।
नर-नारी सब नाचे गाये, जय-जयकार लगाए।।
हो जिनवर – हम सब उतारे मंगल आरती।।2।।

रत्नत्रय पाकर हे स्वामी, मोक्ष मार्ग अपनाया।
आतम ध्यान लगाकर, तुमने केवलज्ञान जगाया।।
हो जिनवर – हम सब उतारे मंगल आरती।।3।।

यही भावना भाते हैं हम, तव पदवी को पावें।
मोक्ष प्राप्त न होवे जब तक, शरण आपकी आवें।।
हो जिनवर – हम सब उतारे मंगल आरती।।4।।

अतिशय पुण्यवान प्राणी ही, दर्श आपके पाते।
'विशद' आरती करने वाले, बिगड़े भाग्य बनाते।।
हो जिनवर – हम सब उतारे मंगल आरती।।5।।

चालीसा

दोहा – परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्त कर, भवदधि पाऊँ पार।।
वंदन करके भाव से, करते हम गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान।।

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया।
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी।।
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया।
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है।
सर्वार्थ–सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए।।
चिह्न बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया।
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए।।
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए।
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई।।
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया।
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई।।
ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अत: कहलाई।
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई।।
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो।
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी।।

उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई।
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया।।
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी।।
छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया।
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई।।
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए।
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया।।
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई।
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस का आहार कराया।।
पश्चाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई।
प्रभुजी केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए।
मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया।।
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें।
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया।।
बने पूर्णत: प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी।
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया।
तब पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ।।

दोहा – चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावें भव से पार।।
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान्।।

प्रशस्ति

(चौपाई छन्द)

लोकालोक रहा मनहार, महिमा जिसकी अपरम्पार।
मध्यलोक में जम्बूद्वीप, मध्य सुमेरू रहा समीप।।
भरत क्षेत्र है दक्षिणभाग, आर्य खण्ड है एक विभाग।
उसमें भारत देश महान्, प्रान्त है जिसमें राजस्थान।।
टोंक जिले में है यह ग्राम, रहा बनेठा जिसका नाम।
मन्दिर जहाँ बने हैं तीन, श्रावक ज्ञानी रहे प्रवीण।।
चन्द्रप्रभु मन्दिर के पास, जैनों का शुभ रहा निवास।
श्रावक के गृह हैं बत्तीस, अग्रवाल जैनी उन्नीस।।
खण्डेलवाल रहे हैं शेष, सभी धार्मिक रहे विशेष।
चन्द्रप्रभु अरु नेमीनाथ, महावीर प्रभु जानो साथ।।
अतिशय तीनों हुए विधान, जिनकी रही निराली शान।
चार दिनों का रहा प्रवास, जैन भवन में कीन्हा वास।।
लिखने का लघु किया प्रयास, सभी पढ़ेंगे है यह आस।
पच्चिस सौ पैंतीस महान, कहलाया महावीर निर्वाण।।
माघ कृष्ण बारस की शाम, लेखन से कीन्हा विश्राम।
आदिनाथ का लिखा विधान, जिसकी महिमा रही महान।।
रही भावना मन में एक, पुण्य कमावें प्राणी नेक।
जैन धर्म का पावें योग, धर्म ध्यान का हो संयोग।।
शुभ उपयोग हमारा होय, नहीं अशुभ क्षण जावे कोय।
ज्ञान ध्यान में बीते काल, अत: कलम को लिया सम्हाल।।
यही भावना मेरी खास, रत्नत्रय का होय विकास।
'विशद' ज्ञान का होय प्रकाश, सिद्ध शिला पर होय निवास।।
ज्ञानी पण्डित नहीं महान, लघ्वाचार नहीं कुछ ज्ञान।
अक्षर मात्रा की हो भूल, करें सभी ज्ञानी निर्मूल।।

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करने से, हृदय कमल खिल जाते हैं
गुरु आराध्य हम आराधक, करते है उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वानन्

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया है
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैं

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैं
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैं

ॐ ह्रीं 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैं

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंॐ
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् नि.स्वाहा।
काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंस होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंॐ
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.स्वाहा।
काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मैटने आये हैंॐ
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.स्वाहा।
मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंॐ
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.स्वाहा।
अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आयें हैंॐ
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादिक फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंॐ
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् नि.स्वाहा।
प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंॐ
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंॐ
ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

जयमाला

दोहा - विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालॐ

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणॐ
छतरपुरी के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीॐ
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।
ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़ेॐ
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षायाॐ
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।

तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसीलिए, भवि जीवों की जड़ता हरतेङ्क
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती हैङ्क
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना हैङ्क
है शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जानाङ्क
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साताङ्क
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करेंङ्क
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करेंङ्क

ॐ ह्रीं 18 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखानङ्क

इत्याशीर्वाद (पुष्पांञ्जलि क्षिपेत्)

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:– माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय–जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावे।
करके आरति विशद गुरू की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य हैं इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कही न जाये।
करके आरति विशद गुरू की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरति विशद गुरू की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरति विशद गुरू की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....
धन्य है जीवन, धन्य है तन–मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरति विशद गुरू की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर

किन राशियों वाले, किस गांव को एवं किस व्यक्ति को कौन-कौन से तीर्थंकर मूलनायक मन्दिर में या घर में रखना चाहिये ?

तुला, मकर, मीन	भगवान आदिनाथ
वृषभ, वृश्चिक, कुंभ, मीन	भगवान अजितनाथ
वृषभ, वृश्चिक, सिंह, मकर, कुंभ	भगवान संभवनाथ
मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, धनु, मीन	भगवान अभिनंदन नाथ
मिथुन, सिंह, वृश्चिक	भगवान सुमतिनाथ
मिथुन, कन्या, वृश्चिक, धनु, मीन	भगवान पद्मप्रभु
मेष, तुला, धनु, मकर	भगवान सुपार्श्वनाथ
वृषभ, सिंह, वृश्चिक, मकर, कुंभ	भगवान चन्द्रप्रभु
धनु, कुंभ, मीन	भगवान पुष्पदंत
तुला, मकर, मीन	भगवान शीतलनाथ
तुला, मकर, मीन	भगवान श्रेयांसनाथ
वृषभ, धनु, कुंभ	भगवान वासुपूज्य
धनु, मकर, मीन	भगवान विमलनाथ
धनु, मकर, मीन	भगवान अनंतनाथ
मेष, वृषभ, कर्क, कन्या, तुला, मकर	भगवान धर्मनाथ
मेष, कर्क, तुला, मकर, कुंभ	भगवान शांतिनाथ
वृषभ, वृश्चिक, कुंभ, मीन	भगवान कुंथुनाथ
वृषभ, वृश्चिक, कुंभ, मीन	भगवान अरहनाथ
मेष, कर्क, तुला, मकर, कुंभ	भगवान मल्लिनाथ
तुला, मकर, मीन	भगवान मुनिसुव्रतनाथ
मेष, तुला, धनु, मकर	भगवान नमिनाथ
मिथुन, कन्या, वृश्चिक, धनु, मीन	भगवान नेमिनाथ
मेष, तुला, धनु, मकर	भगवान पार्श्वनाथ
मिथुन, कन्या, वृश्चिक, धनु, मीन	भगवान महावीर स्वामी

प.पू. क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज द्वारा रचित साहित्य (विधान सूची)

1. पंच जाप्य
2. जिन गुरु भक्ति संग्रह
3. धर्म की दस लहरें
4. विराग वंदन
5. बिन खिले मुरझा गये
6. जिंदगी क्या ?
7. धर्म प्रवाह
8. भक्ति के फूल
9. विशद पंचागम संग्रह-संकलित
10. भगवती आराधना, संकलित
11. विशद श्रमणचर्या, संकलित
12. आराध्य अर्चना, संकलित
13. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई अनुवाद
14. इष्टोपदेश
15. द्रव्य संग्रह
16. लघु द्रव्य संग्रह
17. समाधि तंत्र
18. सुभाषित रत्नावली
19. जरा सोचो तो
20. चिंतन सरोवर भाग-1, 2
21. जीवन की मन: स्थितियाँ
22. संस्कार विज्ञान
23. विशद स्तोत्र संग्रह
24. विशद भक्ति पियूष
25. मूक उपदेश
26. विशद मुक्तावली
27. संगीत प्रसून भाग-1, 2
28. विशद ज्ञान ज्योति (पत्रिका)
29. श्री नवदेवता विधान
30. श्री वृहद् नवग्रह शांति विधान
31. श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ विधान
32. श्री चमत्कारक श्री चन्द्रप्रभु विधान
33. ऋद्धि-सिद्धी प्रदायक श्री पद्मप्रभु विधान
34. मंगलदायक श्री नेमिनाथ विधान
35. श्री महावीर विधान
36. श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान
37. श्री पंचबालयति विधान
38. सर्व सिद्धी प्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
39. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
40. श्री सम्मेदशिखर विधान
41. श्रुत स्कंध विधान
42. श्री तत्त्वार्थ सूत्र मण्डल विधान
43. श्री शान्तिनाथ विधान
44. परम पुण्डरीक श्री पुष्पदन्त विधान
45. वाग्ज्योति स्वरुप वासुपूज्य विधान
46. श्री याग मण्डल विधान
47. श्री 1008 जिनबिम्ब पञ्च कल्याणक विधान
48. विशद 24 गणधर वलय विधान
49. चौबीस तीर्थंकर पूजन विधान
50. कल्याण मन्दिन पूजन विधान
51. श्री आदिनाथ पूजन विधान